जय चाला !!
जय धर्म !!
क्या आदिवासी
प्राकृतिक पूजक हैं
?
लेखक :- शिव प्रकाश भगत

5804

जय धर्मे!! जय चाला!!

क्या आदिवासी प्राकृतिक पूजक है...?

पुरखा पचबल सोहिनी भगत

परम् पूज्य माता जी को संमर्पित

लेखक :- शिव प्रकाश भगत (कुन्नू)

पुस्तक का नामः– क्या आदिवासी प्राकृतिक पूजक हैं.... ?

टाईप सेटिंगः– अमित कुमार भगत एवं कुन्दन कुमार

प्रथम संस्करण :- चान 2017(करम् पूर्व संध्या समारोह)

लेखकः– शिव प्रकाश भगत (कुन्नु)
बजरा बरियातु कुम्बा टोली,
हेहल, रांची, झारखण्ड
मोबाईल -9431558891,9102388911

प्राप्ति स्थानः– जय चाला ईन्टरप्राईजेज
पावा टोली, हेहल, ईटकी रोड, रांची, झारखण्ड
फोन : 9835190269, 9031461119

विचारक :– विनोद कुमार भगत
(सोबरन टोली लोहरदगा)
छुनकु मुण्डा
(मेधा कर्रा, खूँटी)

सहयोग राशि :- 40/-

विषय सूची

पृष्ट संख्या

1. परिचय ——— 1

2. आदिवासी कौन...? ——— 2

3. क्या आदिवासी प्राकृतिक पूजक हैं ...? ——— 2

4. धर्मेश किसे कहते हैं ...? ——— 5

5. आस्था की कमी अपने धर्म में ——— 6

6. धर्म क्या...? ——— 6

7. भगवान या देवता किसे कहते हैं...? ——— 7

8. चाला पच्चो अयंग पुरखों
का माँगा हुआ देवता ——— 8

9. धर्म कोड ——— 10

10. सरना क्या है...? ——— 12

11. देश स्तर पर आदिवासियो का धर्म कोड ——— 16

12. 2001 ई0 जनगणना ——— 17

13. 2011 ई0 जनगणना ——— 20

परिचय

शिव प्रकाश भगत

संचालन कर्त्ता :- जय चाला ईन्टरप्राइजेज

संस्थापक :- पुरखा पचबल देवचरण भगत ट्रस्ट

मैं शिव प्रकाश भगत पिता – देवचरण भगत, डॉड टोली, मझगॉव, डुमरी, गुमला का रहने वाला निवासी हूँ। मैं आदिवासियों के सामाजिक, सांस्कृतिक और धार्मिक क्षेत्र में काफी लम्बे समय से लगा हूँ। इस से पूर्व मेरे पिताजी धरम् बंगस पुरखा पचबल देवचरण भगत ने अपने जीवन काल में धार्मिक एवं समाजिक क्षेत्र को मजबूत करने के लिए बहुत बड़ा योगदान दिया। इन्हीं के मार्ग दर्शन मे 1995 ई0 में जय चाला ईन्टरप्राइजेज की स्थापना हुई। जिसका संचालन कर्त्ता मैं हूँ। अपना पूरा समय देते हुए जय चाला ईन्टरप्राइजेज के द्वारा चाला का फोटो, लॉकेट, कलैण्डर, किताब, सी0 डी0, मुड़मा जतरा खुटा, रोहतास गढ का कलैण्डर, सिरसी–ता नाले का डॉक्यूमेंटरी फिल्म बनाई इत्यादि धरम् से संबन्धित सामग्री आप सबों तक पहुँचाने में लगा हूँ। जो आज प्रत्येक आदिवासियों के घरों एवं गलों में चाला का लॉकेट देखने को मिल रहा है। साथ ही पुरखा पचबल देवचरण भगत ट्रस्ट का रजिस्ट्रेशन करा कर आदिवासियों के लिए समाजिक और धार्मिक कार्य कर रहा हूँ।

जिसमें मुख्य रूप सें :–

1. आदि कालिन धरोहर सिरसी–ता नाले को बचाने के लिए, ककड़ो लाता में 07 डीसमील जमीन लेकर निर्माण कार्य करा रहा हूँ।
2. 22 मई 2010 ई0 को आदिवासी गरीब परिवार के 21 जोड़ों का 21 मड़वा गाड़कर विवाह संपन्न बजरा कुम्बा टोली, सरना स्थल, राँची में ।
3. 7–8 मई 2017 को धरम् स्थल सिरसी–ता नाले में 15 जोड़ो का सामूहिक विवाह कराये। जो शुद्ध रूप से आदिवासी परंपरा के अनुसार हुई।

मैं धर्म के प्रति काफी लगाव रखता हूँ। आदिवासियों कि छूपी या लूप्त हो रही धर्म को, समाज के सामने लाना, मेरा मुख्य उद्देश्य है। इसलिए धरम् से संबन्धित पुस्तक '' क्या आदिवासी प्राकृतिक पूजक है.. ?'' जो जटिल विषय है और ये मेरा प्रथम प्रयास है साथ ही जल्द से जल्द कुड़ुख़ धर्मग्रंथ '' अद्दीयान'' आप के समक्ष होगा।

इस पुस्तक लिखने में विनोद भगत (सोबरण टोली, लोहरदगा) साथ ही छुनकु मुण्ड़ा (मेघा, कर्रा, खूँटी) इन दोनों ने विचार–विमर्श कर सहयोग किया। इस कार्य के लिए मैं उनका अभारी हूँ।

इस पुस्तक के माध्यम से यदि जाने अनजाने किसी के भावनाओं को ठेस पहुँचती है तो मुझे क्षमा करें।

आदिवासी कौन ?

सर्व प्रथम– यह जानना होगा कि आदिवासी किसे कहते हैं आदिवासी का संधि–विच्छेद करने पर आदि+वासी=आदिवासी यानि आदि का अर्थ–आदिकाल, सबसे पहले सृष्टी काल का बोध होता है और वासी का अर्थ–आदिकाल से रहने वाला प्रथम वाँसिंधा(प्रथम बासी) होता है। दूसरी– आदिकालिन वाँसिन्धाओं के साथ ही साथ उनका धर्म आदिकाल से चली आ रही है । आज भी प्रत्येक आदिवासी जाति के धर्म संस्कार, संस्कृति, समाजिक व्यस्था, भाषा, रूढ़ी वादी परम्परा निभाने वाले को ही आदिवासी कहा जाता है। आदिवासी हम उसे कहेगें जिसमें निम्नलिखित बातों का होना अति आवश्यक है।

1. जिनका एक निशिचित भू–भाग क्षेत्र रहता है। जो खुट्ट कट्टी। भूहयरी भू–भाग का स्वामित्व रहता है।
2. उनकी अपनी भाषा है।
3. वो आदिकालिन धर्म संस्कार–संस्कृतति और रूढ़ी वादी परम्परा निभाता है।
4. जिनकी अपनी परम्परिक सामाजिक एवं आर्थिक व्यवस्था है।
5. जो आदिकालीन आख्यानों(श्रुति ज्ञान) के द्वारा धर्म,सामाजिक एवं आर्थिक नीति को संचालित करता है।

पुरखा पचबल देवचरण भगत

<u>नोटः–</u> {आदिकालीन धर्म संस्कार संस्कृति और रुढ़ी वादी परंपरा को निभाना ही अद्दी धरम् कहलाता है।}

---

1. क्या आदिवासी प्राकृतिक पूजक हैं . ?

आज के समय आदिवासीयों को प्राकृतिक पूजक कहते हुए बहुतों से सुना एवं देखा जा सकता है। क्या ये सत्य है ?

पढ़े लिखे बुद्धीजीवी लोग भी अपने को प्राकृतिक पूजक कहते हैं। उनका कहना है कि हमारे पूर्वज जंगलों पहाड़ों में रहते थे। उनका जंगलों से काफी लगाव रहा है। सरहूल और करम् पर्व प्राकृतिक के पेड़–पौधें और फूलों से मनाते हैं। शायद इसी कारण वे अपने को प्राकृतिक पूजक मानते होंगे।

आइए इसे समझने की कोशिश करते हैं :-

इसे जानने के लिए समाज के अतीत में चलना होगा। उराँव समाज में कुछ ऐसे भी व्यक्ति थे जिनका 36 वर्षो से भी अधिक धर्म क्षेत्र में उनका बड़ा योगदान रहा है। उनके मार्ग दर्शन में चाला पच्चो अयंग का कलैण्ड़र, चाला का फोटो, लॉकेट, कि-रिंग, अद्दी धरम् दर्शन का बड़ा पोस्टर ,रोहतास गढ़ का कलैंण्ड़र, मुड़मा जतरा खुटा का कलैंण्ड़र, पलकॉसना धर्म पोथी का पुस्तक ,सिरसी-ता नाले पर डाक्यूमेंट्री फिल्म सन्-1998 में बनवा कर प्रचार प्रसार किये। साथ ही पुरख़ा पचबल देव चरण भगत ट्रस्ट के द्वारा जो रैति जमीन पर अवस्थित है काकड़ो लाता सिरसी-ता नाले के लिये 07 डीसमील जमीन रजिस्ट्री करा कर निर्माण कार्य कर रही है। इनके दिखाये कार्य ही आज आदिवासी समाज में ठोस रूप से दिख रहा है। वे धरम् बंगस पुरखा पचबल देवचरण भगत थे।

उनका कहना था कि आदिवासी में एक संपूर्ण धरम् कहलाने के सारे गुण मौजूद हैं। इस संसार को बनाने वाला सृष्टि कर्त्ता निरंकार धर्मेश हैं। वे मानव रूप धारण कर, पुरूष रूप में माया का देव महयदेव तथा स्त्री रूप में परवरिश करने वाली परवती आये। मानव के सुख दुःख और सुरक्षा के लिए चाला पच्चो अयंग देवता आये। ये सब भगवान या देवता कहलाये। यह सब धर्म के प्रमुख अंग होते हैं।

साथ ही हमारे पास सरहुल पर्व, करम् पर्व, सोहराई पर्व, फागू पर्व, तुसगो पर्व, माघे पर्व आदि जो धार्मिक घटनाओं पर आधारित है। इनके अलावा जन्म संस्कार, शादी संस्कार, मृत संस्कार आदि। कोई नया काम शुरूआत के पहले धर्म विधि पलकॉसना (डण्डाकट्टा) के द्वारा धर्मेश को याद कर पूजा पाठ करते हैं। मानव जीवन में जीने के लिए जितने भी उपयोगिता होनी चाहिए वे सारे आदिवासी धर्म में समाहित है। साथ ही पारंम्पारिक सामाजिक व्यवस्था पड़हा समाज को सुचारू रूप से चलाती है। गॉव के हर कार्य मे पडहा व्यवस्था का सहभागिता रहता है। जैसे :- जन्म संस्कार , शादी संस्कार , मृत संस्कार, खेती बारी, घर मरम्मती आदि कार्य में मदाईत के द्वारा संम्पन किया जाता है। ऐसी समाजिक धार्मिक व्यवस्था अन्य धर्म में देखने को नहीं मिलता है आदिवासीयों की ऐसी सामाजिक धार्मिक व्यवस्था उच्च सत्ता निरंकर धर्मेश, भगवान, देवता के

बगैर संभव नहीं है। ऊपर जो वर्णित की गई अधारें आदिवासी धर्मों में सब कुछ रहते हुए, एक आदिकालिन संपूर्ण धर्म है। ये सब रहते हुए आदिवासी प्राकृतिक पूजक नहीं हो सकते।

क्योंकि पेड़–पौधे, नदी, नाला, पत्थर, चाँद–सूरज, सितारे, जंगल पहाड आदि जो प्राकृतिक स्वरूप के साथ जुड़े होते हैं उनमें सूक्ष्म देव शक्ति नहीं होते हैं। वे कृपा की बारिश नहीं कर सकते। पेड़–पौधे, नदी–नाला, सूरज, चाँद–सितारे आदि, ये प्राकृतिक, मानव जाति के धर्म संस्कार सांस्कृति नेग–नेगचार, विधि–विधान ना ही सिखा सकते और ना ही बता सकते हैं। वे शिथिल अवस्था में प्राकृतिक में पड़े रहते हैं। क्या हमें प्राकृतिक के पेड़ पौधे भाषा सिखाए? वे शक्ति हीन होते हैं। क्योकि हम अपनी धर्म की गहराई नहीं जानते हुए चिन्तन–मन्नन हीं करते हैं, इसलिए कई जातियाँ अन्धविश्वास के साये में जीवन गुजारते हुए अपने को प्राकृतिक पूजक कह रहे हैं। दुनिया के सारे धर्मों में शक्ति का पूजा पाठ किया जाता है। शक्तिहिन का पूजा पाठ नहीं किया जाता है। धरम् बंगस एक उद्धाहरण देते थे जो सटीक बैठता है।

हमसब एक बचपन से पढ़ाई करते हुए बी०ए०,एम०ए० और बड़े होने तक पी०एच०ड़ी० कर पढ़ाई का अन्त करते हैं। इस प्रकार धर्म शिक्षा का अन्तिम लक्ष्य सत्य, परमात्मा, परमेश्वर, धर्मेश, ईश्वर होता है। यह सत्य है की आदिवासी के पूर्वज आदिकाल से धर्म शिक्षा में पी०एच०ड़ी० कर चुके हैं(धर्मेश को जान चुके हैं)। इस लिए सर्वोच्च शक्ति निरंकार धर्मेश के साथ–साथ भगवान या देवता महयदेव परवती, चाला पच्चो अयंग और पूर्वज देवता को भली भाँति जानते थे। इन देवता के रहते हुए प्राकृतिक पुजक नहीं हो सकते उन देवता को प्रतिक रूप मानकर पूजा सेवा करते आ रहे हैं। जैसेः– सरहुल पर्व में साल पेड़ का फूल (सरई फूल) को देवता का प्रतिक मानकर पूजा पाठ करते हैं। करम् डाली को करम देवता का प्रतिक मान कर पूजते हैं। डण्ड़ा कट्टा (भेलवा फरी) में पृथ्वी का प्रतिक अण्ड़ा को मानते हुए पूजा सेवा करते हैं। प्रत्येक गाँव के मड़ई धर्म स्थल में, मडई देव का प्रतिक पिंण्ड़ा बनाकर पूजा करते हैं। मुड़मा के जतरा खुड्डा शक्ति को प्रतिक मान कर खुड्डा का पूजा पाठ करते हैं। शादी के समय ढ़ेला पूजा को, महयदेव–परवती देवता का प्रतिक मान कर धर्म अनुष्ठान पूरा करते हैं। आदि काल से आज भी आदिवासी लोग प्रतिक मान कर पूजा–सेवा करते आ रहे हैं।

धर्म की गहराई को नहीं जानने से, बाहर से प्राकृतिक पूजक जैसे दिखाई देते हैं। लेकिन प्राकृतिक पूजक के पास भगवान देवता सर्वोच्च शक्ति निरंकार धर्मेश और ना ही सूक्ष्म शक्ति का कोई आधार होता है। प्राकृतिक पूजक कहने से हमें धर्म शिक्षा के प्रथम क्लास में पढ़ना होगा। जब कि हमारे पुरखे पी० एच० डी० कर चुके हैं। प्राकृतिक पूजक धर्म की कसौटी पर खरा नहीं उतरता है। जैसे :– फलना धर्म कहने के लिए धर्मेश भगवान देवता तथा सूक्ष्म अनिष्टकारी देवता का होना अतिआवश्यक होता है। आदिवासी प्रकृतिक पूजक कहने से साथ ही सृष्टि कर्त्ता के बगैर धर्म का निर्माण नही हो सकता है।

धर्मेश

संसार के सारे धर्म कहते हैं इस संसार को सृष्टि कर्त्ता ईश्वर, परमात्मा, परमेश्वर , धर्मेश ने पेड़–पौधे , जिव–जन्तु तथा मानव को बनाया यह सत्य है की आदिवासी मान्यता के अनुसार सृष्टि कर्त्ता को निरंकार धर्मेश कहते हैं जिनका कोई आकार–प्रकार नहीं होता है और ना ही दिखाई देता है। कुडुख कथा अनुसार धर्मेश स्वंम मानव रूप धारण कर मानव के बीच आकर भाषा सिखकर खेती–बारी और संसार में जीवन यापन के सारे गुण तथा धर्म विधि विधान सिखये वे पुरूष रूप में माया का देव महयदेव और परिवरिश करने वाली पारवती स्त्री रूप में आये । ये दोनो आपस में पति–पत्नी नहीं हैं क्योकि दोनो निरंकार धर्मेश के अंश हैं इसलिये कभी–कभी महयदेव को धर्मेश कहकर पुरखे लोग संबोधित करते आ रहे हैं।

हिन्दू धर्म मुर्ति–पूजक पर अधारित है। देवता में महान देव महादेव और पार्वती दोनों आपस में पति–पत्नी हैं और उनके दो बच्चे गणेश और कार्तिके हैं। हर साल शिव रात्री में उनकी शादी विवाह करा कर पूजा पाठ किया जाता है, उन सभी की मूर्ति भी बनायी जाती है। मूर्ति उन्हीं का बनता है जो इस दुनिया (संसार) में पैदा लिए रहते हैं। आप देखे होंगे किसी भी मंदिर में मूर्ति स्थापित कर पूजा पाठ तथा आहवान कर, उनके प्राण को प्रतिष्ठित किया जाता है। उसे ही प्राण प्रतिष्ठा अनुष्ठान कहा जाता है। अनुष्ठान के बाद ही मंदिर पूजा पाठ करने योग्य होता है।

आदिवासी के महयदेव–परवती और हिन्दू के महादेव–पार्वती में अकाश जमीन का अंन्तर है। आदिवासी भाई बहनों से निवेदन है कि धर्म की गहराई और चिंतन मनन कर देखें कि सही में हम सब प्राकृतिक पूजक हैं या प्रतिक पूजक ? इसे आपके विवेक पर छोड़ रहा हूँ।

2. आस्था की कमी अपने धर्म में

आज के समय में आदिवासियों की जगह–जमीन, बहु–बेटी, भाषा धर्म, संस्कार, सांस्कृति, उनके धर्म स्थल तथा अधिकार भी छिना जा रहा है। आज हम अपनी धर्मिक गरिमा के प्रति निष्कृय होकर दूसरे धर्मो के प्रति आकर्षित हो रहे हैं। वड़ी दुःख की बात है कि हम अपने धर्म को समझ नहीं पा रहे हैं। इस लिए गैर आदिवासी लोग कहते हैं ''कि आदिवासी लोग प्राकृतिक पूजक हैं। इनका कोई धर्म नहीं है। ये पेड़, पौधे, जल, जंगल, नदी, नाला, चॉद, सूरज को पूजा करते हैं। ये अन्धविश्वास और रुढ़ी वादी परंम्परा को निभा रहे हैं साथ ही मुख्य धारा से कोसों दूर है। इसी कारण आदिवासी लोग हिन्दू धर्म के साथ–साथ ईसाई धर्म अपनाते चले जा रहे हैं। हमारे पढ़े लिखे बुद्धि जीवी भी अपने धर्म के प्रति चिंतन मनन नहीं किये और ना ही धर्म समाज को बढ़ाने में उनका कोई योगदान रहा है। उन्हें पता नहीं आदिवासी धर्म संस्कार,नेग नेगचार, पारंपरिक व्यवस्था जो उच्च कोटि की है जिसे उनके पूर्वजों ने ऐसी बिरासत में दी है। जिसे गॉंव के आदिवासी लोग पीढ़ी दर पीढ़ी से अपने जीवन में आत्मसात कर जीवन व्यतित कर रहे हैं। लेकिन विकसीत समाज, आदिवासियों का धर्म, संस्कार, संस्कृति को निम्न कोटि के समझते हैं। जब की आदिवासियों में एक संम्पूर्ण धर्म कहलाने के सारे गुण मौजुद हैं।

धर्म क्या है..... ?

धर्म उसे कहते हैं जिनमें निम्नलिखित बातें होनी चाहिए :–

1. इस संसार को जिसने बनाया वह सृष्टि कर्त्ता ईश्वर परमात्मा, परमेश्वर, धर्मेश हो ।
2. भगवान या देवता जो सूक्ष्म देव शक्ति हो।
3. अपने पूरखे को देवता स्वरूप पूजा पाठ करते हों।

4. मानव जाति के साथ सूक्ष्म शक्ति का सम्बन्ध हो।
5. धार्मिक घटना के आधार पर पर्व त्योहार का उत्पति हुआ हो।
6. देवता के द्वारा भाषा बतया हुआ हो।
7. देवता का बताया गया खेती–बारी साथ ही कृषि कार्य करने के लिए पूजा अर्चना करने का विधि–विधान हो।
8. अच्छे सूक्ष्म देव शक्ति का पूजा सेवा करना और अनिष्टकारी शक्ति को मनाने वा बनाने की विधि विधान हो।
9. मानव जाति के जन्म से मृत्यू के पश्चात् तक नेगचार विधि–विधान हो।
10. धर्मेश को याद करने का विधि–विधान हो।
11. जिस धर्म में सूक्ष्म देव शक्ति ना हो वह धर्म की संज्ञा में नहीं आता है।
12. जिस मानव जाति के पास भगवान, देवता, धर्मेश, ईश्वर, परमात्मा, परमेश्वर ने खुद मानव रूप धारण कर मानव के बीच आकर धर्म का मार्ग बताये, वे धर्म ही संपूर्ण रूप से मानव जाति का धर्म कहलायेगा।

13. ई0 पूर्व प्राचीन सभ्यता सांस्कृति से संम्बन्ध रखता हो।

मोहन जोदाड़ो हड़प्पा द्रविड सभ्यता हमारी सभ्यता है। किसी भी जाति का धर्म स्थापित करने के लिए इन सूक्ष्म देव शक्तियों का होना अनिवार्य है। भगवान,देवता, धर्मेश, और अनिष्टकारी सूक्ष्म शक्ति इनके बगैर फलना जाति का धर्म कहना व्यर्थ होगा।

दुनिया के सारे धर्मो का कहना है कि धर्मेश, ईश्वर, परमेश्वर, परमात्मा के द्वारा ही इस संसार के जीव जन्तु, पेड़, पौधे, मानव, जल, जंगल, सूरज, चॉद ,सितारे आदि की सृष्टि की है। यही सृष्टि कर्त्ता धर्मे आदिवासी धर्म कथा में समाहित होकर आदिवासियों को धर्म मार्ग बताए हैं ।

भगवान या देवता किसे कहते हैं ?

कुडुख़ आदिवासी मित्थक के अनुसार जो सूक्ष्म देव शक्ति बगैर पैदा हुए, इस संसार में समय समय पर मानव रूप धारण कर मानव के बीच आकर जीवन यापन हेतू भाषा सिखाये, खेती बारी तथा सुख दुःख के अनुभूति के लिए धर्म विधि–विधान

सिखाये। उस सुक्ष्म देव शक्ति को ही आदिवासी पुरखें भगवान या देवता कह कर जानते और मानते आ रहे हैं।

यह सत्य है कि संसार के किसी अन्य धर्मों में परमात्मा, ईश्वर, परमेश्वर स्वयं मानव के बीच मानव रूप धारण कर नहीं आये। वे अवतार वाद के आधार पर इस धरती पर जन्म लेकर आये हैं। वे उनके पुरखे हैं। वे अपने पुरखे को भगवान कहते हैं। इसलिए आदिवासी मान्यता के अनुसार उस धर्म में भगवान या देवता नहीं हो सकते। भले ही वे अपने पुरखों को भगवान या देवता कहते हैं। लेकिन आदिवासी धार्मिक मान्यता के अनुसार उनके वे पुरखे देव कहलायेंगे। निरंकार धर्मेश जब रूप धारण नहीं करते हैं तब वे सिर्फ निरंकार धर्मेश रहते हैं। जिनका कोई रूप, आकार, प्रकार नहीं रहता और ना ही वे दिखते हैं। जब वे रूप धारण कर मानव के बीच आते हैं, तब वे भगवान या देवता कहलाते हैं। इसी अवधारणा के अधार पर कुडु.ख़ आदिवासी, धर्म में समाहित हो कर, अपनी जीवन निर्वाह करते हैं।

चाला पच्चो अयंग पुरखों का मॉगा हुआ देवता :–

सिरसी–ता नाले की श्रुति कथाः– ''एका बीरी गोट्टा राजी चिच–चेंप ती लय मना हेल्लरा निक्खून''

एक समय जब आग पानी की वर्षा हुई थी। पूरे राज्य में प्रलय हो गया, उस समय परवती भाईया बहिन जैसे बच्चे को अपने मूरूल खोपा में छिपा कर रखी। प्रलय शांत होने के बाद सिरसी–ता नाले के ककड़ो लाता में छुपा कर पालन–पोषण कर रही थी। प्रलय हो जाने से पूरे राज्य में मानव जीव जन्तु का कहीं नामों निशान नहीं रहा, तब परवती कहती है महयदेव से मानव खोज कर लाओ नहीं तो ये दुनियॉ कैसे चलेगा।

कला–कला धरमें, छाछेड़ा बेचा कला
कला धरमें छाछेड़ा बेचा–2

जो इस लोक गीत में समाहित है। जब महयदेव मानव को खोजते–खोजते थक जाया करते थे। तो इसी धरम् कण्ड़ो पर बैठ कर थकान मिटाया करते थे। इसलिए ये धरम् कण्ड़ों (धरम् पीढ़ा) कहलाया। महयदेव परवती सिरसी–ता नाले के भईया बहिन को पाल–पोष, भाषा सिखा कर, खेती बारी, और संसार में जीवन यापन के सारे गुण तथा धर्म विधि–विधान सिखाये। इसके बाद महयदेव परवती अपनी दुनियॉ वापस जाने लगे, उस समय

दोनों भईया बहिन कहते है आप तो जा रहे हैं। अब हम अपने दुःख तकलीफ किसे बतायेंगे, कौन हमारी मदत्त करेगा। यह सुन कर महयदेव परवती चिंतित हो गये और वापस जाने के पहले दोनों अपनी अपनी अंश तथा गुण और शक्तियों से संम्पन्न जगता देवता ''चाला पच्चो अयंग'' जिसे आदिवासियों के सुख–दुःख और सुरक्षा के लिए नियुक्त किये। जो आज भी आदिवासी गॉवों के चाला टोंका (सरना स्थल), जाहेर थान में निवास करती है। वह देव शक्ति आदिवासीयों को बुढ़ी मॉ के रूप में दर्शन देकर ''चाला पच्चो अयंग'' के रूप में आज भी साथ है। यही कुडुख़र गहि जगता देवता है। इस शक्ति को दूसरे जगह स्थापित नहीं किया जा सकता है। यह सत्य है की जब भी पुरखे लोग गॉव बसा के रह रहे थे। ये सूक्ष्म देव शक्ति चाला पच्चो अयंग खुद अपने लिए स्थान का चयन करती थी। वो जिस स्थान पर बसना चाहती थी। उसे ही चाला टोंका, जाहेर थान कहते हैं। आप देखे होंगे पाहन, पुजार का प्रत्येक तीन साल में बदली किया जाता है। उस समय चाला टोंका में सूप या लोढ़ा से पाहन, पुजार का सुक्ष्म देव शक्ति के द्वारा ही चुनाव किया जाता है। इसमें मानव जाति चैयन नहीं कर सकते हैं। आज जितना भी सरना स्थल, सुक्ष्म देव शक्ति का चुना हुआ स्थल है। जहॉ चाला पच्चो अयंग निवास करती है। ये सुक्ष्म देव शक्ति मानव के सबसे करीब है। इसके बगैर महयदेव–परवती और ना ही निरंकार धर्मेश से जुड़ पाऐंगे और ना ही याद कर सकते हैं। क्यों की आदिवासी की पूजा सेवा विधि ऐसी है :– 1.सबसे पहले मॉ बाप और पुरखा को 2. चाला पच्चों अयंग 3. महयदेव 4. परवती 5. निरंकार धर्मेश को याद कर पूजा अनुष्ठान पूरा करते हैं।

आदिकाल में चाला टोंका, जाहेर थान,सरना स्थल में अनिष्टकारी सुक्ष्म शक्तियों की पूजा पाठ नहीं होती थी। उन अनिष्टकारी सुक्ष्म शक्तियों का अलग अलग स्थान हुआ करता था जहॉ जा जा कर बलि देकर पहान पूजा पाठ किया करते थे। चाला टोंका शुद्ध रूप में रहता था।

आज के समय में उसी चाला टोंका में चाला पच्चो अयंग सुक्ष्म देव शक्ति को सादगी पूर्वक पूजा सेवा करने के बाद सरना स्थल में ही दूसरी जगह अनिष्टकारी सुक्ष्म देव शक्ति को आहवान और एकत्रित कर मूर्गी, चेंगना, सूअर आदि की बलि देकर पूजा पाठ कर मनाते और बनाते हैं।

आज के समय में सरना स्थल मे अनिष्टकारी शक्ति और सुक्ष्म देव शक्ति का मिश्रण हो गया है। शायद इसलिए बुजुर्ग लोग महिला को सरना स्थल में चढ़ने के लिए मना करते होंगे। चाला पच्चो अयंग सुक्ष्म देव शक्ति इतनी गुणों से परिपूर्ण है जैसे एक परिवार में बुढ़ी दादी या नानी का परिवार के प्रति एक समान देख रेख करना और परिवार का दुःख तकलीफों से बचाये रखना इनका गुण धर्म है। ठीक ऐसे ही चाला पच्चो बच्चों को पढ़ने लिखने में सहयोग करती है। घर द्वार मे सईस बरइकत देती है। किसी दुःख तकलीफ में हमें सुरक्षा देती है। इसे याद कर पूजा सेवा प्रतिदिन करना चाहिए। क्योंकि हमारे भईया बहिन, पूर्वजों का मॉगा हुआ देवता चाला पच्चो है। इसलिए आज भी कुड़ुख़र गहि जगता देवता कहा जाता है। जो गॉव सीमान के अन्दर चाला टोंका जहेर थान रहता है ।

हमारे धर्म में इतना सब कुछ रहते हुए भी हम दूसरे धर्म के पीछे भाग रहे हैं। क्या हमारे पूर्वज बुजुर्ग बेवकूफ थे... ? जो आदिकाल से पीढ़ी दर पीढ़ी होते हुए वो धर्म संस्कार सांस्कृति आज हमारे पास है।

अपने देश में जितने भी धर्म हैं सब के सब मानव निर्मित धर्म है। ईसाई धर्म–जीजस, बौद्ध धर्म–गौत्तम बुद्ध, जैन धर्म –महावीर, सिख धर्म–गुरू गोविंद साहेब, मुस्लीम धर्म–मो0 पैगम्बर ये सारे के सारे मानव थे।

हिन्दू धर्म :– ये मूर्ति पूजक पर आधारित धर्म है। मुर्ति उन्ही का बनता है जो इस दुनियाँ में पैदा लेते हैं। ये मुर्ति आर्य पुरखों का है। इसे ही ये भगवान/देवता कह कर पूजा पाठ करते हैं।

3. धर्म कोड़

हम आदिवासी भाई अपने क्षेत्र के अनुसार, जाति के अनुसार या राज्य के अनुसार अपने धर्म कॉलम या कोड के लिए मांग कर रहे हैं। धर्म के प्रति चिंतन मनन कर रहे हैं। उसी का परिणाम है कि झारखण्ड़, उड़िसा, छत्तीसगढ़, पश्चिम बंगाल, बिहार में आदिवासीयों का धर्म सरना धर्म लिखना आरंम्भ किया। सन् 2011 के जनगणना में भारी संख्या लगभग 50 लाख लिखा चुके हैं। कुछ लोग आदिवासी धर्म और अद्दी धरम भी लिख रहे हैं। यह बड़ी खुशी की बात है कि आज के समय में अपने अलग धर्म की मॉग को लेकर मैदान में उतर रहे हैं।

लेकिन हमें जानना होगा की किस तरह से आंदोलन करने पर धर्मकोड़ या कॉलम मिलेगा। क्योंकि पूरे भारत वर्ष में ४०० से भी ज्यादा आदिवासी जाति रहते हैं। सबके सब अपने धर्म, संस्कृति, रिति रिवाज से परिपूर्ण हैं। जैसे गोंड जाति अपने को गोंडी धर्म कहता है। भील जाति भिली धर्म कहता है। हमारे झारखण्ड़ राज्य के आदिवासी सरना धर्म लिखते हैं। इस तरह से सभी जातियॉ अपना अपना अलग धर्मकोड मांगेंगे तो ये संभव नहीं है । इसलिए हमें देश स्तर पर समस्त आदिवासीयों को विचार विमर्श तथा गहन चिंन्तन कर अपने धार्मिक गरिमा को ध्यान में रखते हुए, पूरे देश में एक धार्मिक नाम पर सहमति बनानी होगी। जिसमें आदिवासियत की झलक हो । जिसे भारत सरकार के समक्ष रखा जा सके । आज के समय अनूसार पूरे देश के लिए दो नाम उपयुक्त दिख रहा है।

1. आदिवासी धरम्
2. अद्दी धरम्

1. आदिवासी धरम् :– आज के समय में गैर आदिवासी लोग आदिवासी उसे कहते हैं जो पिछड़ा हो, असभ्य हो, गरीब हो, अशिक्षित हो, सुदूर जंगलों में रहता हो इत्यादि। ये उनकी धर्मिक कियाकलाप को अंधविश्वासी और निम्न कोटी के समझते हैं। जो मुख्यधारा से कोशों दूर हैं। उसे ही आज के समय में आदिवासी कहते हैं।

आदिवासी शब्द कितनी जातियॉं समूह को संबोधित करती है। आदिवासी जाति के लोग कई अन्य धर्म को अपना चुके हैं, वो फिर भी हमेशा आदिवासी ही रहेंगे। क्यों की आदिवासी धर्म नामांकरण से गिरा, कुचला, निम्न कोटी के धर्म पंथ दिखते है। इसमें आदिवासी लोग गर्व महसूस नहीं कर पायेंगे। इसलिए आदिवासी नाम से आदिवासी धर्म कोड मांगना उचित नहीं लगता है।

2. अद्दी धरम् :– अद्दी धर्म का अर्थ सर्वप्रथम मनुष्य के सृष्टिकाल के समय का बोध होता है। मानव सृष्टि के समय से मनुष्य ने जिस धर्म, संस्कार, संस्कृति, भाषा, पारंपरिक, सामाजिक व्यवस्था तथा नेग–नेगचार का आरम्भ किया । उसी व्यवस्था को पीढ़ी दर पीढ़ी होते हुए आज भी निभा रहे हैं। उस धार्मिक विधि–विधान, नीति को अद्दी धरम् कहते हैं। दूसरे शब्दों में शुरूआती धर्म अद्दी धर्म कहलाता है।

इतिहास गवाह है 5000 ई. पूर्व में मोहन जोदाड़ो हड़प्पा में द्रविड़ सभ्यता पूर्ण रूपेण विकसित तथा फल फूल रही थी। जब आर्य लोग आए उस काल में आर्य लोग घुमक्कड़ जाति हुवा करते थे। इनका कोई धर्म नहीं था। आज हमारे देश में छः धर्म पंजीकृत हैं हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, बौद्ध, जैन। उस काल में इन धर्मों का नामों निशान नहीं था। उस काल में भारत के जितने भी धर्म हैं अद्दी धर्म उनके पिता हैं। इसलिए हमें अद्दी धरम् कहने या लिखने में गर्व महसूस होना चाहिए।

1. अद्दी धर्म कहने से आदिकाल धर्म का बोध होता है।
2. अद्दी धर्म कहने से भारत देश के सभी धर्मों से पहले का, सृष्टिकाल का, शुरूआती धर्म कहलाता है।
3. अद्दी धर्म कहने से आदिवासीयों के बीच स्वंय धर्मेश,मानव के बीच मानव रूप धारण कर आए और सारे धर्म की विधि–विधान बताए। उनके बताए हुए मार्ग को ही धर्म कहते हैं। तथा उस मार्ग पर चलना अद्दी धरम् कहलाता है।
4. अद्दी धर्म अख्यानों (श्रुतिज्ञान) पर आधारित है।अद्दी धर्म नामांकरण होने से पूरे देश के आदिवासियों को गर्व महसूस होगा।

नोट :– आख्यान (श्रुति ज्ञान) उसे कहते हैं। जिनकी कथा धार्मिक श्रृष्टि पर आधारित हो, जिसमें एक पात्र मानव और दूसरा पात्र अमानव होना अति आवश्यक है। तब वो अख्यान कहलाती है। दोनों पात्र मानव होने पर वह लोक कथा कहलाती है। इसी अख्यान के द्वारा आदि काल से पीढ़ी दर पीढ़ी होते हुए आज भी हम आदिवासी अनुशासित तथा सुखमय जीवन व्यतीत कर रहै हैं।

सरना क्या है..... ?

बृहद झारखण्ड घने जंगलों से भरे पडे थे। आदि काल में जब आदिवासी लोग जंगल काट कर जमीन समतल कर खेत बना रहे थे। जंगलो में बड़ी भयानक अवाज आने लगी। जंगली

जानवरों की डरावनी चींखे पुकार होने से पूरखे लोग घबरा जाते थे। डर के मारे कहने लगे कौन हो सामने आओ। वहॉ के सुक्ष्म शक्ति रूप धारण कर पूरखों के बीच आये और कहे, क्यों जंगल काट रहे हो ,क्यों उजाड़ रहे हो। हमारे पूरखे कहे हम यहॉं रहना चाहते हैं। खेत बना कर अन्न उपजायेंगे और नदी किनारे समतल भूमि पर हम बसना चाहते हैं। तब सुक्ष्म देव शक्तियों ने कहा कि यह मेरा इलाका है यहॉं रहना है तो हम सुक्ष्म देव शक्ति लोगों को सेवा करना पड़ेगा। यहॉ जो भी फल–फूल अन्न पैदा करोगे तो सबसे पहले हमसब को देना होगा। अगर तुम सब को शर्त मंजूर है तब यहॉं बस सकते हो।

हम सब तूम्हारी अन्न–धन, गाय, बैल, बकरी, जीव–जन्तु की रक्षा करेंगे साथ ही दुःख तकलीफ नहीं होने देंगे। तुम सब हमारी पूजा पाठ करोगे। हमारे पूरखों ने उनकी शर्त मान ली थी। सुक्ष्म देव शक्ति जब हमारे पूरखों के सामने आए, सब भयभीत हो गये। इस समूह में जो व्यक्ति निड़र होकर वार्त्तालाप किये और पूरे समूह के लिए उनके शर्त को मंजूर कर स्वीकार किया। उस व्यक्ति को आदिकाल में पाहन कहा जाता था। आज भी वही पाहन के द्वारा सरना तथा गॉंव में पूजा पाठ किया जाता है।

उस समय बहुत सारे सूक्ष्म देव शक्ति अपनी शक्ति के द्वारा अपने ढ़ंग से सुरक्षा देने की बात कही और कहा हम सब हमेशा रूप धारण कर नहीं आ सकते हैं। इसलिए तुम सब जो पशु–पक्षी, जानवर को पालतू बना कर पालोगे। उसी पशु–पक्षि जानवर में हमें बुलाओगे तो हम आयेंगे। हर एक सुक्ष्म देव शक्ति ने कहा मैं रंगुआ मुर्गा में, मैं पारक्षा मुर्गा में, कोई काली मुर्गी में, कोई सुअर में साथ ही हमें पुकारते समय हाथों में आरवा चावल उठा कर प्रार्थना करोगे, हे फलना देव हमारी पूजा पाठ स्वीकार करते हो, पशु पक्षी के माथों पर गिराते हुए कहना तूम खुश हो तो चावल चर कर दिखाओ। खुश होने पर सचमुच वह मुर्गा चरने लगता है। अगर सुक्ष्म देव खुश नहीं रहने पर 4 दिनों का भूखा मुर्गा भी नहीं चरता है। उस समय पाहन सुक्ष्म देव से क्षमा मॉगते हुए प्रार्थना करता हैं। गलती सलती माफ करना कहते हुवे फिर से चावल गिराता है नहीं खाने से सुक्ष्म देव नाराज है ऐसा समझा जाता है। या नेग नेगचार में कुछ कमी

होने पर भी ऐसा होता है। देव शक्ति का गुण है कि पशु-पक्षी और जीव पर ही सुक्ष्म देव सवार होते हैं। निर्जीव पर नहीं। आदिवासी विधि द्वारा अच्छे सुक्ष्म देव को सेवा पूजा करते हैं और अनिष्टकारी देव शक्ति को बनाते या मनाते हैं। दोनों ही दशा में मैं हूँ मैं खुश हुआ का तत्तकाल प्रमाण मिलता है।

गैर आदिवासी धर्मो में ऐसा अनुष्ठान देखने को नहीं मिलता है। क्योंकि उनका धर्म मानव द्वारा स्थापित किया गया है। सरना में सुक्ष्म देव शक्ति को साल में एक बार सरहुल दिन पूजा पाठ कर बनाने और मनाने का पर्व है।

इस झारखण्ड में सबसे पहले जंगल झाड़ काटकर बसने वाले आदि निवासी का सरहुल पर्व है। सरहुल पर्व हमें याद दिलाता है कि किस तरह हमारे पूरखे़ सुक्ष्म देव शक्ति से सम्बन्ध स्थापित कर जंगल झाड़ काट कर खेत ख़लियान तथा रहने लाईक गाँव बसाया। साथ ही आदि काल में पूर्वज लोग गाँव सिमान के अन्दर जितने भी सुक्ष्म शक्तियाँ रहते थे। सरहुल पर्व में उन सब को उनकी जगह जा जा कर मुर्गी, चेंगना ,सुअर दे कर पुजा पाठ करते थे। उस काल में सरना स्थल का नाम जाति भाषा के अनुसार चाला टोंका ,जाहेर थान कहते थे। लेकिन कई सदी से पाहन पूजार तथा गाँव के समूह सुक्ष्म शक्ति को आहवान कर एकत्रित किये और सरहुल के दिन सरना माँ, चाला पच्चो अयंग, जाहेर बुड़ी को सादगी पूर्वक पूजा पाठ करने के पश्चात् उस स्थान से हटकर इन सुक्ष्म शक्तियों के लिए आवश्यकता या माँग के अनुसार दरहा, देशवाली, चण्ड़ी अन्य अनिष्टकारी सूक्ष्म देव शक्तियों के लिए बलि देकर पूजा पाठ कर मनाते और बनाते हैं।

लेकिन कुछ सालों से आदिवासियों की नई परंपरा आरम्भ हुई है प्रत्येक गुरूवार को महिला लोग पूजा पाठ करने के लिए सरना स्थल जाती रही है। बुजुर्ग लोग इसे पसंद नही करते। क्योंकि पाहन द्वारा साल भर के लिए पूजा पाठ मनाकर बैठा देते हैं। उसे बार बार उठाने की परंपरा नहीं है। गाँव में किसी विशेष परिस्थिति होने पर सरना स्थल में पहान द्वारा दूसरी या तीसरी दफा चढ़ते हैं। पूर्वजों का कहना है महिला शरीर ऐसी है जिसमें सुक्ष्म आत्मा का जन्म होता है। वे इतना नाजूक होता है कि कोई भी सुक्ष्म आत्मा , सुक्ष्म शक्ति उनके शरीर में प्रवेश या सवारी असानी से कर जाते हैं। जिस से महिलाओं को भारी परेशानी का सामना करना पड़ता है। कई तरह के अनिष्टकारी शक्ति का

जामवड़ा रहता है। किस महिला पर कौन सा शक्ति उनके शरीर पर प्रवेश करेगा। वे कितना संम्भाल पायेगी। इसी समय से मुसिबत आरम्भ हो जाती है। कितने लोग पागल सा हो गए हैं। कितने लोग सहज जीवन व्यतीत नहीं कर रहें हैं ऐसे कई उद्धारण है। इसलिए शायद बुजुर्ग लोग सरना स्थल जाने के लिए मना करते हैं। एक बात ध्यान देने की है सारी दुनियाँ के धर्म कहते है इस संसार को सृष्टि कर्त्ता ने पेड़–पौधे, जीव–जन्तु सब कुछ बनाया। इसलिए सृष्टि कर्त्ता जीव जन्तु का बलि नहीं ले सकते हैं। अनिष्टकारी सुक्ष्म शक्ति ही खून, बलि ले कर कुछ समय के लिए सुरक्षा मुहैया कराते हैं। खून बलि लेकर आपका मुराद कुछ समय के लिए पूरा करते हैं। क्योकि जहाँ गॉव बसा है वह क्षेत्र अनिष्टकारी शक्ति के अधिन रहा है हमारे पूर्वज ने उनके शर्त मंजुर किया था साल में तुम्हें एक निश्चित दिन सरहुल में पूजा पाठ करेंगे। जिसे पीढ़ी दर पीढ़ी से मानते हुए आज भी मान रहे हैं। सरना स्थल को देखा जाए तो अनिष्टकारी शक्तियों का स्थल दिखता है। पाहन द्वारा भी गाँव के लिए अन्न धन जीव जन्तु के लिए रोग विकार दुःख तकलीफ से सुरक्षा के लिए साल में मुर्गी, चेंगना, सुअर आदि कि बलि देकर मनाते और बनाते हैं। ऐसे में हम भूत पूजक दिख रहे हैं। गैर आदिवासी जब सरहुल पर्व में सरना स्थल पर मुर्गी,चेंगना,सुअर आदि कि बलि देकर पूजा पाठ करते देखेंगे, तो निश्चित ही उसे भूत पूजक कहेंगे। यह सत्य है कि आदिवासीयों के पास संस्कार, सांस्कृति, नेग–नेगचार तथा धर्म इतनी उच्च कोटी की है वो आदिवासी भूत पूजक नही हो सकते लेकिन सरना धर्म लिखने से सुक्ष्म शक्ति या भूत पूजक मानने वाला धर्म कहलाएगा। जिसे हम सब इसे स्वीकार नही कर पायेंगे और हमें आत्म ग्लानी महसूस होगी। सरना धर्म से आदिवासियत की बू नही आती है। पढ़े लिखे बुद्धीजीवी से नम्र निवेदन है कि देश स्तर पर आदिवासी के लिए ऐसा नाम खोजा जाए जिसमें आदिवासियत की झलक गहरी होनी चाहिए। खुद चिन्तन मनन कर इसे देखें। सरना धर्म हमें कहॉ ले जायेगी।

1. आज आदिवासी के पास एक संपूर्ण धर्म होने के लिए सब कुछ है।

2. आदिवासी धार्मिक परम्परा में दो तरह से पूजा सेवा किया जाता है।

3. अच्छे सुक्ष्म देव शक्ति को अरवा चावल और स्वच्छ पानी के द्वारा पूजा सेवा किया जाता है।

4. अनिष्टकारी सुक्ष्म देव शक्ति को सरना स्थल में खून बलि देकर पूजा पाठ किया जाता है।

क्या सरना धर्म मांगना उचित होगा देश स्तर पर.. ?

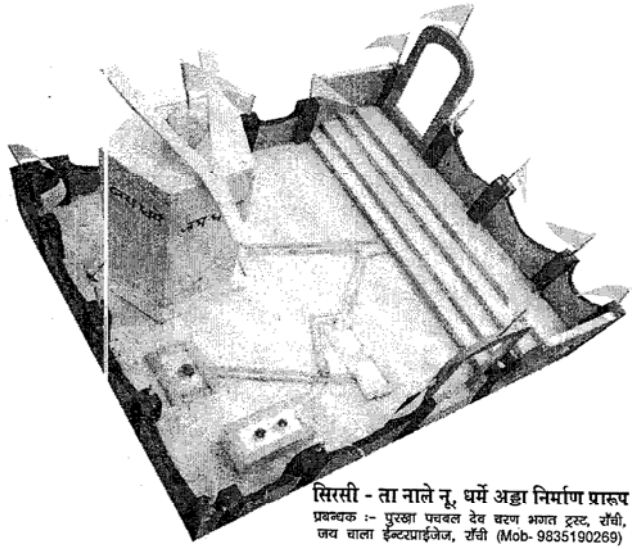

सिरसी - ता नाले नू, धर्मे अड्डा निर्माण प्रारूप
प्रबन्धक :- पुरखा पचवल देव वरण भगत ट्रस्ट, राँची,
जय चाला ईन्टरप्राईजेज, राँची (Mob- 9835190269)

जय धर्मे

देश स्तर पर आदिवासियों का धर्म कोड़ :-

श्री देवकुमार धान संयोजक आदिवासी सरना महासभा, तिल्ला, रातू, राँची झारखण्ड़, के द्वारा धर्म कोड़ के संबन्ध में RTI (सूचना अधिकार) के तहत माँगी गई रिपोर्ट :-

2011

भारत सरकार/Bharat Sarkar

गृह मंत्रालय/Grih Mantralaya

भारत के महारजिस्ट्रार का कार्यालय

OFFICE OF THE REGISTRAR GENERAL, INDIA

सामाजिक अध्ययन प्रभाग, सेवा भवन,

रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली-110066

Social Studies Division, Sewa Bhawan,

R.K.Puram, New Delhi-110066

फा.सं. 16/2/2010-एसएस

दिनांक : 12.11.2015 20

सेवा में

श्री देव कुमार धान,
संयोजक,
आदिवासी सरना महासभा,
तिल्ता, रातू,
रांची, झारखंड।

विषय : जनगणना अनुसूची के अनुसार जनजातीय धर्म 'सरना' के संबंध में पृथक धर्म कोड का आबंटन।

महोदय,

कृपया निदेशक (सांख्यिकी), जनजातीय कार्य मंत्रालय द्वारा दिनांक 19.10.2015 के पत्र सं. 15025/1/2015-स्टैट्स. के माध्यम से अग्रेषित उपर्युक्त विषयक अपने दिनांक 6.10.2015 के पत्र सं. 015/2015-रांची का संदर्भ लें। इस संबंध में मुझे यह कहने का निदेश हुआ है कि:

1. याचिका में दिया गया यह वक्तव्य वस्तुतः असत्य है और तर्कसंगत नहीं है कि जनजातीय धर्म 'सरना' को हिन्दू जैसे धर्मों अथवा किसी अन्य धर्म/श्रेणी के साथ जोड़ने के प्रयास किए जा रहे हैं। जनगणना 2001 के अनुसार सरना धर्म के अनुयाइयों की संख्या से यह पता चलता है कि उक्त धर्म को किसी अन्य धर्म के साथ नहीं जोड़ा गया है।

2. कोड का आबंटन कोई अन्य विशेषता स्थापित करने की अपेक्षा सुविधाजनक गणना के प्रयोजन से अधिक होता है। प्रचालन संबंधी सुविधा के लिए संख्या की दृष्टि से छह बड़े धर्मों के कोड जनसंख्या अनुसूची में दर्शाए गए हैं। पृथक कोड आबंटित किए गए धर्म को कोई लाभ अथवा विशेष सुविधा प्राप्त नहीं होती है।

3. 'अन्य धर्म और धारणाएं' वह श्रेणी है जिसमें जनगणना कार्य के दौरान उत्तरदाताओं द्वारा बताए गए अनुसार प्रत्येक जनजातीय धर्म, मान्यताओं और धारणाओं की पृथक संख्या का वर्गीकरण किया जाता है और धर्म की परिशिष्ट सारणी में प्रकाशित किया जाता है। धर्म संबंधी आंकड़े एकत्र किए जाने के लिए अंगीकार की गई स्थापित प्रक्रिया के अनुसार छह मुख्य धर्मों अर्थात हिन्दू, मुसलमान, इसाई, सिख, बौद्ध और जैन के नामों को जनगणना अनुसूची में कोड संख्या के साथ विनिर्दिष्ट किया गया है। जनगणना प्रगणकों को निदेश दिया जाता है कि वे दिए गए खानों में छह प्रमुख धर्मों के नाम दर्ज करें और उनकी कोड संख्या भी दें। लेकिन अन्य धर्मों के मामले में उनको नाम तो पूरा लिखना है लेकिन कोई कोड संख्या नहीं देनी है। जैसा कि जनगणना 2001 के आंकड़ों से सुस्पष्ट है 'सरना' के जनजातीय अनुयाइयों की संख्या भारत में 'अन्य धर्म और धारणाओं' के बीच सर्वाधिक है। 'सरना' धर्म को मानने वाली जनजातियां मुख्यत: पूर्वी राज्यों अर्थात उड़ीसा, झारखंड और पश्चिम बंगाल में संकेन्द्रित हैं जिनके बाद बिहार का क्रम आता है। मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ में 'सरना' धर्म के अनुयाइयों की संख्या उल्लेखनीय नहीं है। इसका अर्थ यह हुआ कि अपना धर्म सरना बताने वाली जनजातियां केवल पूर्वी राज्यों तक ही सीमित हैं। जनगणना 2001 के अनुसार उपर्युक्त राज्यों में सरना धर्म के अनुयाइयों का राज्यवार ब्यौरा नीचे दिया जाता है :

जनगणना 2001 के अनुसार 'सरना' के अनुयाइयों की संख्या दर्शाने वाला विवरण

भारत	4075246
बिहार	43342
झारखण्ड	3450523
मध्य प्रदेश	50
छत्तीसगढ़	2450
ओडिशा	353520
पश्चिम बंगाल	224704

4. हिन्दुओं में वैष्णव, आनन्दमार्गी, ब्रह्मो समाज, लिंगायत/वीर शैव, मुसलमानों में शिया/सुन्नी, बौद्धों में हीनयान अथवा महायान जैसे सुविख्यात पंथों तथा सरना, सिंग, बोंगा, तना भगत इत्यादि जैसे अनेक जनजातीय धर्मों सहित सभी धर्मों के मानने में जनगणना आंकड़ों के सारणीकरण के समय क्रमबद्ध रूप से छह अंकीय कोड संख्या दी गई थी। चूंकि जनगणना अनुसूची में बड़ी संख्या में धर्मों, मान्यताओं और धारणाओं को शामिल करने अथवा सूचीबद्ध करने का स्थान नहीं है इसलिए उनमें से प्रत्येक को कोड संख्या उपलब्ध करवाना व्यावहारिक रूप से संभव नहीं है। उपर्युक्त विवरण को ध्यान में रखते हुए जनजातीय धर्म के रूप में 'सरना' के लिए पृथक कोड का आबंटन करने संबंधी याचिका में की गई मांग स्वीकार्य नहीं है। सभी विभिन्न जनजातीय धर्मों के लिए कोड/कालम संबंधी मांगें तर्कसंगत नहीं हैं। वर्ष 2001 में इसको तत्कालीन गृह मंत्री श्री लालकृष्ण अडवाणी द्वारा अनुमोदित किया गया था।

5. स्वतंत्रता प्राप्ति से पहले की अवधि- 1901, 1911, 1921 और 1931 में जनगणना अनुसूचियों में जनजातीय धर्मों सहित किसी भी धर्म को पृथक कोड नहीं दिया गया था। बल्कि 1911 से 1931 तक की जनगणनाओं में जनगणना प्रगणकों को यह अनुदेश दिए गए थे कि "ऐसी आदिम जनजातियों के मामले में जोकि

हिन्दू, मुसलमान, इसाई इत्यादि नहीं हैं, इस कालम में जनजाति का नाम दर्ज किया जाए।" स्पष्टत: जनजातीय धर्मों सहित प्रत्येक धर्म की संख्या की गणना भरी हुई अनुसूचियों में दर्ज किए गए उत्तरों (नामों) के आधार पर की गई थी 'कोड' के माध्यम से नहीं।

6. जनगणना 2001 में 100 से अधिक जनजातीय धर्मों की जनकारी मिली थी तथा देश के प्रमुख जनजातीय धर्म सरना (झारखण्ड), सनामही (मणिपुर), डोनी पोलो (अरूणचल प्रदेश), संथाल, मुण्डा, ओरासन, गोंडी, भील आदि थे। इसके अतिरिक्त इस श्रेणी के अंतर्गत 'आदिवासी' और 'जनजातीय धर्म' के पृथक ब्यौरे थे। जनगणना 2001 में झारखंड राज्य के संबंध में श्रेणी 'अन्य धर्म तथा धारणाएं' के अंतर्गत 'सरना' सहित कुल मिलाकर 50 धर्म पंजीकृत किए गए थे। इनमें से 20 धर्मों का नाम संबंधित जनजातियों पर है। इनमें से प्रत्येक के लिए पृथक कोड/कालम आवंटित करना अथवा एक पृथक श्रेणी बनाना व्यवहार्य नहीं है। इसके अतिरिक्त, जनगणना में 'सरना' को छह अन्य प्रमुख धर्मों के समान कालम/कोड के आबंटन से बड़ी संख्या में अन्य धर्मों से भी ऐसी ही मांगे उठेंगी और इसे रोका जाना चाहिए।

7. जहां तक 9 फरवरी से 28 फरवरी तक जनगणना आयोजित करने की समय सीमा को बदलने का संबंध है, इस मामले को विचार किए जाने के लिए 2021 में अगली जनगणना से पहले तकनीकी सलाहकार समिति (टीएसी) के समक्ष प्रस्तुत किया जाए।

भवदीय,

(सी.टोप्पो)
सहायक निदेशक

2011 DETAILS OF RELIGIOUS COMMUNITY SHOWN UNDER 'OTHER RELIGIONS AND PERSUASIONS'			
Religious Community	Total	Persons	
6	7	8	
Other Religions and Persuasions	Total	7937734	
Addi Bassi	Total	86877	
Adi	Total	24381	
Aka	Total	297	
Animist	Total	4130	
Apo Rangang	Total	133	
Baiga	Total	1884	
Bhil	Total	1323	
Bhoi	Total	602	
Bhumia	Total	181	
Birsa	Total	2395	
Bodo / Boro	Total	294	
Bori	Total	113	
Chang Naga	Total	462	
Dongi	Total	278	
Doni Polo / Sidonyi Polo	Total	331370	
Dupub	Total	3326	
Fralung	Total	2381	
Garo	Total	121	
Gond / Gondi	Total	1026344	
Hajong	Total	110	
Halba	Total	532	
Heraka	Total	9956	
Hill Miri	Total	111	
Ho	Total	1418	
Idu / Idu Mishmi	Total	591	
Kaman / Miju Mishmi / Kaman Mishr	Total	133	
Karbi / Mikir	Total	204	
Katkari	Total	316	
Kharwar	Total	493	
Khasi	Total	138512	
Kisan	Total	146	
Korku	Total	234	
Koyatur	Total	364	
Krupa	Total	140	
Marangboro	Total	176	
Munda	Total	1086	
Nani Intiya	Total	4528	
Nature Religion	Total	5635	
Niam Shnong	Total	915	
Niamtre	Total	84276	
Nocte	Total	1511	
Non Christians	Total	1538	
Nyarino	Total	1365	
Oraon	Total	1091	
Pagan	Total	2088	
Paharia	Total	591	
Pardhi	Total	533	
Santal	Total	6485	
Saranath	Total	837	
Sari Dharma	Total	506369	

Sarna	Total	4957467	
Sarnam	Total	1494	
Songsarek	Total	19834	
Swarna	Total	121	
Tadvi	Total	1786	
Tana Bhagat	Total	1108	
Tribal Religion	Total	17393	
Yumasam	Total	19093	
Budhadeo	Total	1345	
Intaya	Total	1208	
Rangfra	Total	10598	
Bamanya	Total	121	
Hidmaraj	Total	102	
subba	Total	171	
Rangkho thak	Total	152	
Tikao Ragong	Total	373	
paniyar	Total	233	
Mannan	Total	118	
Baigani Dharam	Total	488	
ADI KURUM	Total	235	
Adim dhamm	Total	57022	
A.C.	Total	1317	
Bahai / Bahais	Total	4572	
Jews / Judaism	Total	4429	
Nirankari	Total	1781	
Parsi/Zorastrian	Total	57264	
Sadri	Total	153	
Sanamahi	Total	222422	
Traditional Religion	Total	1239	
Dera Sarsa	Total	139	
ADI DHARM	Total	82255	
Bidin	Total	29553	
Atheist	Total	33304	

INDIA

POPULATION BY RELIGIOUS COMMUNITY - 2011									
Rural/	Total	Hindu	Muslim	Christian	Sikh	Buddhist	Jain	Other religion	Religion not stated
Total	1210854977	966257353	172245158	27819588	20833116	8442972	4451753	7937734	2867303

इसे देख कर देश स्तर पर आदिवासियों का धर्म कोड क्या नाम से माँगा जाय...।

जय चाला !! जय धर्मे !!

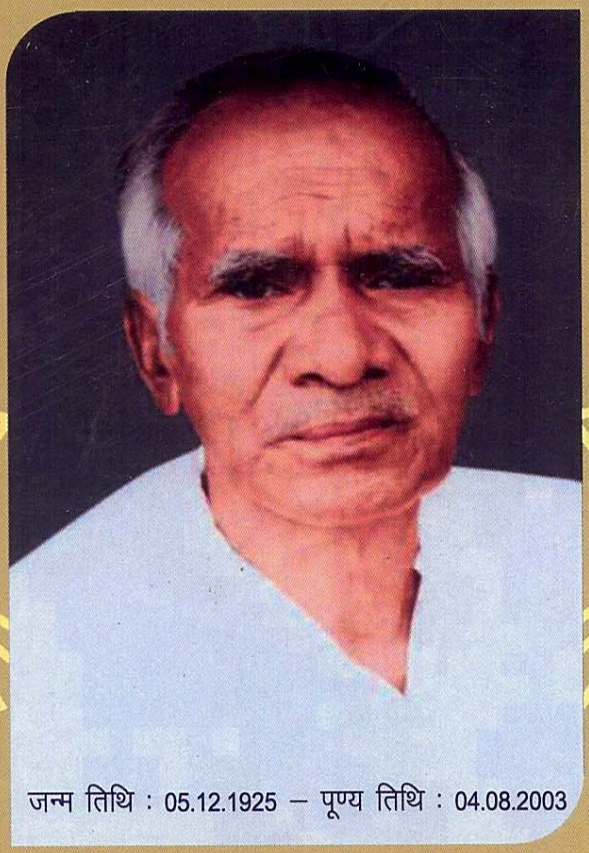

जन्म तिथि : 05.12.1925 – पूण्य तिथि : 04.08.2003

धरम् बड़स पुरखा पचबल

देव चरण भगत

इनकी लिखी पुस्तकें :-

1. अद्दी धरम्न चोद–आ, परदा–आगे ''धरम् नलख'' (धार्मिक कार्यक्रम)चान –1987
2. अद्दीयर गे ''अखना जोगे धरम् कत्था'' मुँध ख़ोर (प्रथम संस्करण) चान –1987
3. पल काँसना पुजा नेग गहि धरम् पोथी–मुँध ख़ोर चान–1988–प्रथम संस्करण, 2003–द्वितीय संस्करण, 2008– तृतीय संस्करण
4. राजी गवन–अना (धार्मिक एवं लोक कविता) चान–1988
5. अद्दी धरम् नेम्हा भजन पोथी चान –1988
6. अद्दी धरम् गहि परब पोथी चान –1989
7. अद्दीयर गहि नेग धरम् पोथी चान –1989

JCE

प्रकाशकः–
जय चाला ईन्टरप्राईजेज
पावा टोली, हेहल, ईटकी रोड, रांची, झारखण्ड
फोन : 9431558891, 9031461119, 9102388911

धरम् ग्रंथ अधियान् जल्द आ रहा है ...